शिशु एवं टीकाकरण

गृह विज्ञान विभाग
स्वास्थ्य विज्ञान विद्याशाखा
उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय

टीकाकरण एवं इसकी आवश्यकता

- टीकाकरण एक सरल उपाय है जो शिशु को बहुत सी खतरनाक बीमारियों से बचाता है। जन्म के समय शिशु कमजोर होता है तथा उसमे रोगों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता नहीं होती है। इसीलिए शिशु का टीकाकरण जरुरी होता है। टीकाकरण से शिशु के शरीर में एंटीबाडीज या प्रतिरक्षी बनते हैं जो शिशु के शरीर को बीमारियों से लड़ने के लिए तैयार करते हैं।
- शिशु में बहुत से एंटीबाडीज (बीमारियोँ से लड़ने की शक्ति) जन्म के समय उसकी माँ से विरासत में मिलती है। यह एंटीबाडीज शिशु के शरीर में गर्भनाल या umbilical cord के द्वारा पहुँचती हैं। कुछ एंटीबाडीज शिशु को माँ से स्तनपान के द्वारा मिलते रहते हैं। मगर यह एंटीबाडीज शिशु मैं बहुत अधिक आयु तक संक्रमण से नहीं लड़ सकते हैं। अत: शिशु को इन सभी संक्रमणों से बचाने के लिए शिशु का समय समय पर टीकाकरण होना अति आवश्यक है|
- आंकड़ों के अनुसार भारत में हर साल करीब 17,00,000 शिशु विभिन प्रकार के बीमारियों के कारण मर जाते हैं।

आवश्यक टीके

बीसीजी का टीका (B.C.G. vaccination)

- यह टीका शिशु को पैदा होते ही लगाया जाता है और यह टीका अंतर्त्वचीय इंजेक्शन के रूप में लगाया जाता है।
- बीसीजी का टीका शिशु को टीबी से बचाता है।

डीपीटी का टीका (D.P.T. vaccination)

- डीपीटी का टीका शिशु को डिफ्थीरिया, परट्यूसिस और टिटनेस जैसी गंभीर जानलेवा बीमारियोँ से बचाता है।
- डिफ्थीरिया एक ऐसे बीमारी है जिसकी शुरुआत तो गले के खराश से होती है मगर समय के साथ ये आगे चलकर जीवन के कई जटिलताओं को बढ़ा देता है।
- परट्यूसिस को आम भाषा में काली खासी कहते हैं। यह फेपड़ों के संक्रमण से सम्बंधित बीमारी है।
- टिटनेस की वजह से घाव जल्दी नहीं भरते।

खसरे का टीका

- खसरे का टीका एक प्रकार के संक्रामक वायरल से बचाता है।
- इस बीमारी मैं शिशु को शरीर पर छोटे दाने निकल आते हैं और बुखार भी चढ़ जाता है।
- जब बच्चा 9 months का हो जाता है तब शिशु को खसरे का टीका लगाया जाता है।

हेपेटाइटिस बी का टीका

- हेपेटाइटिस बी एक बेहद भयंकर बीमारी है जो पीलिया से भी खतरनाक है, यह एक प्रकार का संक्रामक वायरल है जो लिवर को बुरी तारक छतीग्रस्त कर देता है।
- हेपेटाइटिस बी का टीका शिशु को अलग अलग समय पर तीन खुराकों के क्रम में दिया जाता है।

चिकनपॉक्स का टीका (chickenpox vaccination)

- यह टीका शिशु को चिकनपॉक्स के वायरल संक्रमण से बचाता है।
- इस टीके की दो खुराक दी जाती हैं। पहली खुराक शिशु को 12-से-15 महीने के दौरान दी जाती है। और दूसरा dose शिशु को 4-से-5 साल के बीच दिया जाता है।

ऍमऍमआर का टीका (MMR vaccination)

- ऍमऍमआर का टीका शिशु को खसरा, टोंसिल्स और रूबेला से बचाने के लिए दिया जाता है।

इन्फ्लुएंजा का टीका

- इन्फ्लुएंजा साँस की बीमारी है जो श्वसन प्रणाली को छति पहुँचता हैं। इस बीमारी मैं शिशु को साँस लेने मैं काफी तकलीफ होती है।
- यह टीका जब बच्चा 6 महीना का होता है तब उसे दिया जाता है।

रोटा वायरस का टीका

- रोटा वारस की वजह से शिशु को आंत्रशोथ और दस्त हो सकता है। यह टीका शिशु को आंत्रशोथ और दस्त से बचाता है।

HIB का टीका - हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा बी (HIB) वैक्सीन

- मस्तिष्कावरण शोथ की वजह से शिशु के brain और spinal cord को नुकसान पहुँचता है। हिब का टीका शिशु को मस्तिष्कावरण शोथ से बचाता है।
- इस टीके की चार खुराक दी जाती हैं। पहले दो टीके पहले दो महीने मैं और दूसरे दो टीके 12 वें माह में दिए जाते हैं।

शिशु के टीकाकरण के पश्चात दिखायी देने वाले कुछ सामान्य लक्षण

- टीका लगाने के बाद शिशु में हल्के-फुल्के लक्षण जैसे: हल्का बुखार, दर्द, सूजन इत्यादि नज़र आ सकते हैं किन्तु अगर बुखार तेज़ हो, दर्द और सूजन बहूत ज्यादा नजर आये तो डॉक्टर को तुरंत संपर्क करें।
- डीपीटी के इंजेक्शन (डी पी टी का टीका) के बाद शिशु में इंजेक्शन वाली जगह पर सूजन और वह स्थान लाल हो सकता है। उस जगह पर गांठ भी बन सकती है जो कुछ सप्ताह बाद अपने आप ही खत्म हो जाती है। दर्द और भुखार कम करने के लिए डॉक्टर पैरासेटेमोल पिलाने के लिए दे सकते हैं।
- एमएमआर के टिके के लगभग 4 से 10 दिनों के बाद शिशु को बुखार हो सकता है।
- टीका शिशु में बीमारी होने की सम्भावना को कम करता है परंतु यह जरुरी नहीं की टीकाकरण के बाद बच्चा बीमार ही न पड़े।

टीकाकरण न होने का दुष्प्रभाव

- टीकाकरण अभियान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योँकी यह कई प्रकार की बीमारियों से शिशु को सुरक्षा प्रदान करती है।
- जिन शिशुओं का टीकाकरण नहीं हुआ है वे शिशु अत्यधिक बीमार या फिर आगे चलकर कमजोर हो सकते हैं। क्योंकि उनमें बहूत सी खतरनाक बीमारियों से लड़ने की प्रतिरोधक क्षमता विकसित नहीं हुई होती है।
- ऐसे शिशु स्थायी रूप से अक्षम या कुपोषित सकते हैं अथवा कई गंभीर बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं।
- सरकारी आंकड़ों के अनुसार शिशुओं में 50 प्रतिशत मौतें कुकर खांसी से, 30 प्रतिशत मौतें पोलियो से और करीब 20 प्रतिशत मौतें खसरे से होते हैं।

टीकाकरण के पूरे कोर्स का महत्व

- शिशु को हमेशा किसी भी ठीके का पूरा कोर्स दे। उसे बीच में बंद न करें। ऐसा करने से बीमारी के कीटाणु टीके के प्रति प्रतिरोध डेवेलप कर लेते हैं, जो काफी नुकसानदेह और हानिकारक है।
- अगर पहले वर्ष में किसी कारण से शिशु को कोई टीका नहीं लगा है तो जितनी जल्द से जल्द हो सके उसे टीका लगवाने का इंतेजाम करना चाहिए।
- राष्ट्रीय टीकाकरण दिवसों और टीकाकरण कार्यक्रम का भरपूर लाभ उठा कर टीकाकरण करवाएं।
- कुछ बिमारियों के लिए पूरक टीके की खुराक जिसे 'बुस्टसर शॉट्स' कहते हैं उपलब्ध हैं इन्हें शिशु को अवश्य लगवाएं क्योंकि यह साधारण टीके से ज्यादा कारगर हैं तथा अधिक प्रभावी भी होते हैं।

टीकाकरण चार्ट 2018

शिशु के जन्म के समय दिए जाने वाला टीका

1.B.C.G.

2.हेपेटाइटिस बी का टीका- पहली खुराक

3.पोलियो वैक्सीन - पहली खुराक

6 सप्ताह और डेढ़ माह की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.D.P.T. - पहली खुराक

2.पोलियो का टिका- पहली खुराक (IPV1)

3.हेपेटाइटिस बी का टीका - दूसरी खुराक

4.हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा बी (HIB) - पहली खुराक

5.रोटावायरस- पहली खुराक

6.न्यूमोकोकल कन्जुगेटेड वैक्सीन- पहली खुराक

10 सप्ताह और ढाई माह की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.D.P.T. - दूसरी खुराक

2.पोलियो का टिका- दूसरी खुराक (IPV2)

3.न्यूमोकोकल कन्जुगेटेड वैक्सीन- दूसरी खुराक

4.हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा बी (HIB) - दूसरी खुराक

5.रोटावायरस- दूसरी खुराक

14 सप्ताह की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.D.P.T. - तीसरी खुराक

2.पोलियो का टिका- तीसरी खुराक (IPV3)

3.मुँह में लिया जाने वाला पोलियो वैक्सीन- दूसरी खुराक

4.हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा बी (HIB) - तीसरी खुराक

5.न्यूमोकोकल कन्जुगेटेड वैक्सीन- तीसरी खुराक

6.रोटावायरस- तीसरी खुराक

6 महीने की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.मुँह में लिया जाने वाला पोलियो वैक्सीन - तीसरी खुराक OPV

2.हेपेटाइटिस बी का टीका - तीसरी खुराक

3.इन्फ्लुएंजा I

4.इन्फ्लुएंजा II

5.इन्फ्लुएंजा III

9 महीने की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.खसरे का टीका

2.मुँह में लिया जाने वाला पोलियो वैक्सीन - चौथी खुराक

10-12 महीने की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.टाइफाइड कन्जुगेटेड वैक्सीन (TCV 1) - पहली खुराक

2.हेपेटाइटिस A - पहली खुराक

3.थोड़े समय बाद हेपेटाइटिस A - दूसरी खुराक

1 वर्ष की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.कॉलरा

2.जापानीज इन्सेफेलाइटिस - पहली खुराक

3.जापानीज इन्सेफेलाइटिस - दूसरी खुराक

4.जापानीज इन्सेफेलाइटिस - तीसरी खुराक

5.वरिसेला- पहली खुराक

15-18 महीने की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.एम एम आर (मम्प्स, खसरा, रूबेला) - पहली खुराक

2.वेरिसेला- दूसरी खुराक

3.D.P.T. - पहला बूस्टर डोज़

4.हेमोफिलस इन्फ्लुएंजा बी (HIB) - बूस्टर डोज़

5.न्यूमोकोकल कन्जुगेटेड वैक्सीन- बूस्टर डोज़

6.मुँह में लिया जाने वाला पोलियो वैक्सीन- पांचवा खुराक

7.टाइफाइड कन्जुगेटेड वैक्सीन (TCV 2) - दूसरी खुराक

8.टाइफाइड I

9.टाइफाइड II

2 वर्ष की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.मेनिंगोकोकल

5 वर्ष की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1.एम एम आर (मम्प्स, खसरा, रूबेला) - दूसरी खुराक

2.D.P.T.- दूसरा बूस्टर डोज़

3.मुँह में लिया जाने वाला पोलियो वैक्सीन- छठा खुराक

10 वर्ष की उम्र में दिए जाने वाला टीका

1. टीडी (टेटनस, डिप्थीरिया)

संपर्क :

मोनिका द्विवेदी

अकादमिक परामर्शदाता

गृह विज्ञान विभाग, उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय

ट्रांसपोर्ट नगर के पीछे

विश्वविद्यालय मार्ग , हल्द्वानी

Contact details

Toll Free no: 1800 180 4025

Website: http://uou.ac.in